1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को मर्यादा
पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के जन्मदिवस
(रामनवमी) की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 41, अंक 22 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 19 मार्च, 2018 से रविवार 25 मार्च, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द चेयर की स्थिति

दयानन्द को कालिदास नहीं बनने देंगे : आर्यसमाज का आह्वान

नवम्बर, 2017 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू जी सी) ने विश्व विद्यालयों से दयानन्द चेयर स्थापित करने के लिए आवेदन मांगे थे। पूरे भारत से 750 विश्वविद्यालयों ने इसके लिए मांग की गयी थी। लेकिन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से हरियाणा की महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी, जम्मू की जम्मू यूनिवर्सिटी व गुजरात की सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी का ही इसके लिए चयन किया गया है।

परन्तु इसके बाद 27 फरवरी 2018 को चंडीगढ़ से प्रकाशित चण्डीगढ ट्रिब्यून अखबार के पेज 2 पर छपी खबर के अनुसार पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ में 1975 से प्रतिष्ठित् 'दयानन्द चेयर' को संस्कृत विभाग में जोड़ने के बहाने खत्म करने की योजना बनाई जा रही है। जबकि यूनिवर्सिटी प्रशासन का कहना है कि वह इसे केवल विलय ही कर रहा है। जबकि विश्लेषक कह रहे हैं कि यह सरासर धोखा है–संस्कृत के साथ, वेद के साथ, आर्य समाज के साथ और भारतीय परम्परा के साथ क्योंकि यही धोखा पहले कालिदास चेयर के साथ हुआ था और युनिवर्सिटी ने कालिदास की वैचारिक हत्या की थी। कालिदास चेयर को संस्कृत में विलय कर दिया गया था। आज उसकी सत्ता खत्म और कोई कार्य भी नहीं हो रहा है। आज कालिदास केवल प्रश्नपत्रों में सवाल बनकर रह गया। हम यह धोखा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के साथ नहीं होने देंगे।

गुरुविरजानन्द गुरुकुल महा विद्यालय, करतारपुर जालन्धर के प्राचार्य डॉ. उदयन आर्य ने इस मामले में सवाल उठाते हुए लिखा है कि एक तो दयानन्द चेयर को करीब 30 साल से कोई स्थाई अध्यक्ष नहीं मिला है। दूसरा इसमें टीचिंग स्टाफ भी पूरा नहीं है। इसे पूर्ण स्थान भी नहीं दिया गया है। इसे एक क्लास रूम में लावारिस सा छोड़ दिया गया है। लाइब्रेरी का लाभ भी छात्र नहीं उठा पा रहे हैं, जिससे छात्रों को भारी नुकसान हो रहा है।

पंजाब विश्वविद्यालय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के साथ ऐसा होगा ऐसी आशंका नहीं थी क्योंकि पंजाब से स्वामी दयानन्द का विशेष सम्बन्ध रहा है। उनके गुरु स्वामी विरजानन्द भी पंजाबी थे। लाहौर उनकी विशेष कर्मभूमि रही है। पूरी दुनिया को पंजाब ने 'पाणिनि' जैसा व्याकरण विद्वान दिया। इसके बाद दूसरा पाणिनि स्वामी विरजानन्द भी पंजाब में ही पैदा हुए। उनके शिष्य स्वामी दयानन्द द्वारा अनेक ग्रन्थ इसी पंजाब में लिखे गये हैं। स्वामी जी शास्त्रों के कुशल व्याख्या की, स्वाधीनता के अग्रदूत, महिला व पिछड़ों के स्वाभिमान के रक्षक, भला उनके इस विराट् स्वरूप और साहित्य तथा सिद्धांत का अध्ययन करने के लिए पंजाब से अच्छी भला क्या जगह हो सकती थी। इसलिए 1975 में पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द चेयर की स्थापना की गई। दयानन्द चेयर में 70 से अधिक पी. एच–डी. हो चुके हैं। इस दीक्षान्त–समारोह में भी दयानन्द चेयर के चार छात्रों को पीएचडी की उपाधि प्राप्त हुई है। चेयर के माध्यम से इसमें प्रोफेसरों और छात्रों ने जो अनुसन्धान किया है, उसकी पूरे विश्व में प्रतिष्ठा है।

उदयन आर्य का कहना है कि आज आर्थिक तंगी का हवाला देकर सिर्फ दयानन्द चेयर और संस्कृत की हत्या क्यों की जा रही है? जिस संस्कृत विभाग की स्थापना पीयू लाहौर के कुलपति ए.सी. वूल्नर ने की थी, उसी को आज ये काले अंग्रेज बर्बाद करने पर तुले हैं। क्या संस्कृति, वेद व भारतीय शास्त्रों के अध्ययन को तबाह करने की साजिश की जाँच नहीं होनी चाहिए? क्या आज विश्व विद्यालयों का उद्देश्य सिर्फ रुपये कमाना ही रह गया है। जबकि विश्वविद्यालयों का ध्येय अपनी ज्ञानसम्पदा की रक्षा करना होना चाहिए। सम्पूर्ण संस्कृत जगत् और आर्य समाज कालिदास चेयर को खत्म करने के साथ दयानन्द चेयर को विलय करने के नाम पर वेद और संस्कृत की हत्या करने वालों का विरोध करता है तथा इसकी रक्षा के लिए देशव्यापी आन्दोलन करने में संकोच नहीं करेगा। अतः सादर प्रार्थना है कि दयानन्द चेयर की स्वतन्त्रता बरकरार रखी जाए और इसे सही जगह दी जाए व अलग विभाग रखकर संस्कृत अध्ययन को भी सुरक्षित किया जाए तभी देश हित, संस्कृति हित, धर्म हित तथा पूर्ण संसार का हित होगा। – **विनय आर्य**

नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2075 के शुभारम्भ पर विशेष

वर्ष प्रतिपदा नवसम्वत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस

– प्रकाश आर्य

.......किसी भी संस्था की पहचान उसके उद्देश्य, उसके संस्थापक और कार्यकर्त्ता तथा किये गये कार्यों से होती है। समाज में ऐसे अनेक व्यक्ति, संगठन, संस्थायें हो चुकी हैं जिसके द्वारा समाज व राष्ट्र को बहुत कुछ दिया गया, किन्तु उसके उस त्याग, तपस्या व बलिदान की जानकारी आज भी ठीक-ठीक रूप से समाज को नहीं है। ...... ऐसी ही श्रृंखला में आर्य समाज उनमें से एक है, आर्य समाज का कार्य क्षेत्र व उद्देश्य संकुचित विचारों या सीमा से उठकर है। बहुत कुछ मानव समाज को आर्य समाज ने दिया है। इसकी जानकारी होने पर हर कोई स्वतः मानने लगेगा कि इस जैसा कोई दूसरा संगठन नहीं है। इस लेख के माध्यम से आर्यसमाज के कुछ बिन्दुओं पर संक्षेप में चर्चा करते हैं।......

वर्ष प्रतिपदा चैत्र शुक्ल 1 सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना मुम्बई शहर में देश के 85 प्रबुद्ध गणमान्य नागरिकों के आग्रह पर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा की गई। इस हेतु प्रथम प्रस्ताव कोलकाता में ठाकुर देवेन्द्रनाथ, ईश्वरचन्द सैन जैसी विभूतियों ने भी दिया था।

किसी भी संस्था की पहचान उसके उद्देश्य, उसके संस्थापक और कार्यकर्ता तथा किये गये कार्यों से होती है। समाज में ऐसे अनेक व्यक्ति, संगठन, संस्थायें हो चुकी हैं जिसके द्वारा समाज व राष्ट्र को बहुत कुछ दिया गया, किन्तु उसके उस त्याग, तपस्या व बलिदान की जानकारी आज भी ठीक–ठीक रूप से समाज को नहीं है।

ऐसी ही श्रृंखला में आर्य समाज उनमें से एक है, आर्य समाज का कार्य क्षेत्र व उद्देश्य संकुचित विचारों या सीमा से उठकर है। बहुत कुछ मानव समाज को आर्य समाज ने दिया है। इसकी जानकारी होने पर हर कोई स्वतः मानने लगेगा कि इस जैसा कोई दूसरा संगठन नहीं है। यहाँ संक्षेप में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा करते हैं –

आर्य समाज ईश्वर विश्वासी संगठन है – आर्य समाज की यह मुख्य व दृढ़ मान्यता है कि इस समस्त सृष्टि का, जड़ चेतन का आधार, परमात्मा है। उसकी कृपा के बिना कुछ भी संभव नहीं है। हर पल उसकी दया समस्त प्राणियों पर बरस रही है। इसलिए उस सब जगत के स्वामी परमात्मा जिसका मुख्य नाम ओ३म् है उसकी ही स्तुति प्रार्थना उपासना (भक्ति) करने को आर्य समाज श्रेष्ठ मानता है। आर्य समाज के पहले नियम में ही इसका उल्लेख इस प्रकार किया है। **''सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।''**

सनातन धर्म का अनुयायी – धर्म वही है जो पूर्ण हो सबके लिए है और सदा से था सदा है और सदा रहेगा। ऐसी धार्मिक विचारधारा का कोई स्रोत तो होगा ही जिसने यह हमें दिया। धर्म प्रारम्भ से था इसका कोई न प्रारम्भ है न अन्त है तो ऐसी प्रेरणा देने वाला भी वही हो सकता है जिसका न आदि है और न अन्त है। वह कोई मनुष्य तो हो नहीं सकता, सदा रहने वाली शक्ति तो एकमात्र ईश्वर ही है। परमात्मा सदा रहता है इसलिए उसे सनातन सत्ता माना जाता है। इसलिए उसके ज्ञान को सनातन ज्ञान और उसे ही सनातन धर्म माना गया है। वह ज्ञान वेदों के माध्यम से प्राप्त हुआ हमारे पूर्वज (महाभारत काल के पूर्व तक) वेद को ही परम धर्म मानते थे इसलिए कहा गया – **''वेदोऽखिलो धर्म मूलम्''** अर्थात् – वेद ही धर्म का मूल है। हमारे पूर्वज पितरों के ज्ञान चक्षु भी यही वेद रहे हैं, कहा गया है – **''सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम्''** पितरों के ज्ञान चक्षु वेद हैं।

सन्त तुलसीदास जी भी धर्म का आधार वेद को बताते हुए कहते हैं –

जेहि विधि चलहि वेद प्रतिकूला।
तेहि विधि होई धर्म निर्मूला।।

सनातन ज्ञान के आधार ईश्वरीय वाणी वेद है, वही धर्म का आधार है। इसी सत्य सनातन वैदिक धर्म को आर्य समाज मानता है। आर्य समाज का मानना है कि संसार के समस्त प्राणियों का धर्म एक ही हो सकता है। हाँ सम्प्रदाय व मत–मतान्तर भिन्न–भिन्न हो सकते हैं।

– शेष पृष्ठ 8 पर

वेद-स्वाध्याय

संकल्प बल की महती महिमा

अवधीत् कामो मम ये सपत्ना उरुं लोकमकरन्मह्यमेधतुम्।
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्त्रो मह्यं षडुर्वीर्घृतमा वहन्तु।। - अथर्व. 9/2/11
ऋषिः **अथर्वा**।। देवता - **कामः**।। छन्दः **भुरिक्त्रिष्टुप्**।

शब्दार्थ-कामः = मेरे सङ्कल्प -बल ने **मे ये सपत्नाः** = मेरे जो प्रतिद्वन्द्वी बाधक हैं उन्हें **अवधीत्** = नष्ट कर दिया है, **मह्यम्** = मेरे लिए **उरुलोकम्** = विस्तृत खुला हुआ लोक **अकरत्** = कर दिया है, **एधतुं (अकरत्)** = मेरे लिए वृद्धि व विस्तार कर दिया है। अब **मह्यम्** = मेरे लिए **चतस्रः प्रदिशः** = चारों उपदिशाएं **नमन्ताम्** = झुक जाएं और **षट् उर्वि:** = छहों विस्तृत दिशाएं **मह्यम्** = मेरे लिए **घृतम्** = क्षरित हुए इष्ट फल को **आवहन्तु** = ले- आएं।

विनय- मेरा सङ्कल्प-बल जाग गया है। मनुष्य के सङ्कल्प में बड़ा बल छिपा हुआ है, भगवान् जिस अपने 'काम' से-ईक्षण-शक्ति से-सब जगत् को उत्पन्न करते और चलाते है। वह संसार की असीम शक्ति मनुष्य के सङ्कल्प में आई हुई है- यह बात अब मुझे अपनी सङ्कल्प-शक्ति के जागने पर अनुभव हो रही है। मेरे जागे हुए सङ्कल्प-बल ने, उस काम ने, सबसे पहले मेरी बाधाओं को, रुकावटों को हटाने में अपनी शक्ति लगाई है। मेरे सङ्कल्प ने काम, क्रोध, लोभ आदि सपत्नों को, रिपुओं को मार गिराया है। इच्छामूलक (वासना मूलक) काम-क्रोधादि दुर्भाव ही मेरे एकमात्र सपत्न थे जो मेरे आत्म-मूलक देवभावों के मुक़ाबले में आते थे और उन्हें दबाये रखते थे, परन्तु मेरे दृढ़ सङ्कल्प ने इन्हें बड़े यत्न से अब मार दिया है, बेजान कर दिया है। इन बाधाओं को हटाकर मेरे सङ्कल्प ने इन्हें बड़े यत्न से अब मार दिया है बेजान कर दिया है। इन बाधाओं को हटाकर मेरे सङ्कल्प ने मुझे एक विस्तृत निर्बाध खुले लोक में पहुंचा दिया है। मेरे लिए एक नया अमित क्षेत्र खुल गया है। मैं बढ़ गया हूं, इस विस्तृत क्षेत्र-भर में फैला हुआ मैं अपने को अनुभव करता हूं। अब मैं जो सङ्कल्प करता हूं वह सीधा वेग से बेरोक-टोक अपने दूर-से-दूर स्थित लक्ष्य पर जा पहुंचता है और उसपर अपना प्रभाव करने लगता है। जब मैं तृष्णाओं का मारा काम-क्रोधादि सपत्नों से आक्रान्त रहता था, तब मैं जो कोई सङ्कल्प किया करता था उनका शीघ्र ही व्याघात हो जाता था। इधर एक निश्चय करता था तो उधर दूसरी ओर का ध्यान न रहने से उधर से मुझे चोट पहुंचती थी, इस प्रकार बड़ी मुश्किल में रहता था, परन्तु अब मेरे आत्म-सङ्कल्प ने मुझे इनसे ऊपर उठा दिया है और मुझे एक खुले लोक में पहुंचा दिया है। अब मेरे बढ़ते जाते हुए सङ्कल्प-बल के सामने कौन ठहर सकता है? इस विस्तृत लोक में प्रतिष्ठित होकर मैं अब जो सङ्कल्प करूंगा उसे प्रकृति को, सब संसार को पूरा करना होगा। ये विस्तृत छहों दिशाएं और चारों उपदिशाएं मेरे सामने झुक जावें, इन सब दिशाओं का संसार मेरी सङ्कल्पित वस्तु को क्षरित करने के लिए तैयार रहे। पूर्व में, पश्चिम में, उत्तर में, दक्षिण में, नीचे या ऊपर जहां भी अपने आत्म-सङ्कल्प को चलाऊं, भेजूं, वहां का संसार मेरे सङ्कल्प से क्षरित हुए उस अभीष्ट फल को (घृत को) मेरे लिए उपस्थित कर देवे। संसार में अब ऐसी कौन-सी दिशा या स्थान रहा है जहां से मेरा महान् सङ्कल्प आत्म-सङ्कल्पित वस्तु को क्षरित नहीं कर सकता!

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

केरल : अनुष्ठान के नाम पर शोषण

कुछ पल सोचिये! धार्मिक अनुष्ठान के नाम पर आज के भारत में पांच से 12 साल के मासूम बच्चों के शरीर को लोहे के हुक से छेदा जाता हो, परम्परा के नाम पर बांह के नीचे त्वचा में लोहे के हुक से छेद करने के बाद उसे धागे से बांध दिया जाता हो और यह पीड़ादायक परम्परा लगातार सात दिन चलती हो तो क्या इसे धार्मिक अनुष्ठान कहा जायेगा? केरल में एक सरकारी अधिकारी श्रीलेखा राधाम्मा ने एक हिन्दू मंदिर में इस धार्मिक परम्परा का विरोध किया है।

दरअसल दक्षिण भारत के एक राज्य केरल के एक हिन्दू मंदिर में यह धार्मिक परम्परा पूरी श्रद्धा से चल रही है। इनमें अधिकांश बच्चे श्रद्धालुओं के होते हैं और उन्हें अपने जीवन में इससे एक बार गुजरना होता है। इस शारीरिक प्रताड़ना को तपस्या बताया जाता है जिसमें बच्चे को जमीन पर सोना पड़ता है और 108 बार दंडवत प्रणाम करना पड़ता है। इस अनुष्ठान के दौरान सभी बच्चे बलि के बकरे की तरह दिख रहे होते हैं।

हालाँकि राज्य में इसके खिलाफ कानून है, इस कृत्य को अपराध की श्रेणी में भी गिना जाता है लेकिन जब परम्परा के प्रति श्रद्धा में डूबे लोग इसके खिलाफ कुछ नहीं करना चाहते तो कौन इसकी शिकायत करेगा? मां-बाप तो नहीं करेंगे और जो लोग यह सब देखते हैं उनकी सुनी नहीं जाएगी।

बताया जा रहा है कि इस परम्परा में शामिल बच्चे सिर्फ एक कटि वस्त्र पहनते हैं, तीन बार ठंडे पानी में डुबोए जाते हैं, इस धार्मिक परम्परा का अभ्यास तिरुवनंतपुरम के अत्तुकल भागवती मंदिर में किया जाता है जिसे वे कुथीयोट्टम कहते हैं। कहा जाता इस परम्परा में अधिकांश गरीब तबके के परिवारों के बच्चों को पैसों के बदले अमीर परिवारों के द्वारा खरीदा जाता है। विडम्बना देखिये इस परम्परा में शामिल बच्चों को उनके माता-पिता को देखने तक नहीं दिया जाता।

सबसे हैरान कर देने वाली बात यह है कि इस त्यौहार के बाद इन बच्चों का क्या होता है? चूंकि इस प्रथा का मतलब यह है कि भगवान को मानव बली प्रदान की गई है अतः बाद में उन बच्चों का पूरी तरह से सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाता है, यह समाज उन्हें हमेशा के लिए मृत मान लेता है। लोग उन्हें मनहूस मानते हैं और यही व्यवहार उनके साथ जीवन भर किया जाता है।

राजनीतिक संरक्षण प्राप्त इस मंदिर से इस प्रथा को बंद करने की सभी कोशिशें अब तक बेकार ही गई हैं। ये बेहद दु:खद है कि यह सब उस राज्य में हो रहा है जहां पर साक्षरता का पैमाना देश में सबसे ऊपर है और उससे भी दु:खद है कि कुछ बेहद ही रसूखदार और मजबूत लोगों के शामिल होने की वजह से अब तक इस पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं हुई है। इस दमनकारी प्रथा से लड़ रहे सभी लोगों के पास बस एक ही रास्ता बच जाता है, वह है उम्मीद का रास्ता। उम्मीद यह कि एक दिन इतनी जागरूकता होगी कि लोग इसको गलत मानेंगे और सरकारी तंत्र नींद से जागेगा ताकि हर साल कम से कम 24 मासूम बच्चे बचाए जा सकें।

हालाँकि भारतीय संस्कृति सदियों से कई कुप्रथाओं, परम्पराओं और रीति-रिवाजों को आस्था के नाम से ढो रही है। मसलन परेशानी कितनी भी हो लेकिन पूर्वजों द्वारा दी आज्ञा निरन्तर जारी रखी जा रही है। इसमें किसी कुप्रथा को, बिना सोचे समझे बिना तर्क की कसौटी पर कसे और बिना किसी परिवर्तन के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ियों में

.....हैरान कर देने वाली बात यह है कि इस त्यौहार के बाद इन बच्चों का क्या होता है? चूंकि इस प्रथा का मतलब यह है कि भगवान को मानव बली प्रदान की गई है, अतः बाद में उन बच्चों का पूरी तरह से सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाता है, यह समाज उन्हें हमेशा के लिए मृत मान लेता है। लोग उन्हें मनहूस मानते हैं और यही व्यवहार उनके साथ जीवन भर किया जाता है।.......

सदियों श्रद्धा के नाम से दिया जा रहा है। लोग अपने निजी स्वार्थ के चलते इन परम्पराओं को धर्म का हिस्सा बनाकर गर्व से अपने भाव व्यक्त भी करते हैं।

हम सभी परम्पराओं पर प्रश्न चिन्ह नहीं उठा रहे हैं क्योंकि यज्ञ, हवन जैसी बहुत सारी परम्पराएँ हमारी वैदिक कालीन आज भी बिना किसी भेदभाव के, बिना किसी शोषण के अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। ये परम्पराएं हमारे ऋषि मुनियों द्वारा निर्मित हैं। यह सदियों से निरंतर जारी है। इन परम्पराओं के पीछे उद्देश्य यह था कि हम अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज और भारतीय संस्कारों को न भूलें लेकिन एक 250 साल पहले बनी परम्परा को धर्म का हिस्सा बताकर मासूम बच्चों का शोषण करना कहाँ तक उचित है?

दरअसल, परम्पराओं का रुपांतरण, प्रथाओं में बदलाव कुछ लोगों द्वारा किया जाता है। जो परम्पराओं की छांव में लालच, असहिष्णुता और कई तरह की सामाजिक विसंगतियों की पूर्ति करना चाहते हैं। हालांकि यह काफी हद तक अपने कार्य में सफल भी हो जाते हैं। इसी कारण लाख कोशिशों के बाद भी अपने देश से यह कुप्रथा पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाई।

जिस तरह शरीर को कष्ट देकर इसे तपस्या का नाम देकर ढोंग किया जा रहा है। ऐसे ढोंग आप देश के भिन्न-भिन्न धर्म स्थलों में देख सकते हैं। कोई एक मुद्रा से, यथा-हाथों को उठाए खड़ा मिलेगा, कोई पैर पर खड़ा दिखता है, कोई काँटों पर लेटा है, तो कोई रेंग-रेंगकर मंदिर दर्शन को जाता है। ऐसे अनेक कथित तपस्वी और हठयोगी भारतवर्ष के सभी कोनों, विशेषत: तीर्थो, आश्रमों, नदी के किनारों और पर्वतों की कंदराओं में मिलेंगे। सर्वसाधारण वर्ग विश्वासी और श्रद्धालु समाज ऐसे तपस्वियों का बखान करने से नहीं चूकता उनमें किसी अतिमानवीय अथवा आध्यात्मिक शक्ति के प्रतिष्ठित होने में विश्वास भी करने लगते हैं।

सामाजिक मान्यता मिलने के कारण इन्हें बढ़ावा मिलता रहा है। इसी कारण कुप्रथाओं ने विकराल रूप धारण कर लिया। अशिक्षा और अज्ञानता की वजह से कुछ लोग इन कुप्रथाओं को अब भी ढोए जा रहे हैं। जबकि सब जानते हैं कि यह संसार हर क्षण बदलता है, इसलिये उसके पीछे कोई ऐसी सत्ता अवश्य होनी चाहिये जो कभी न बदलती हो। वही सत्ता परमात्मा है, वही सत्य है। ऐसे में हमें वास्तविक परम्पराओं को ही जीवित रखना चाहिए। कुप्रथाओं का अंत देश, समाज और परिवार सभी के लिए मंगलकारी होगा। - *सम्पादक*

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

नव सम्वत्सर – तुम्हें पहचान गए

- डॉ. उमा शशि दुर्गा

...अधिकांश संवत् चैत्र प्रतिपदा से आरम्भ किये गए हैं क्योंकि ब्रह्मपुराण में स्पष्ट लिखा गया है-'चैत्रमासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमऽहीन।' 'सिद्धान्त शिरोमणि' ग्रन्थ के अनुसार आदित्यवार में चैत्र मास शुक्ल पक्ष के आरम्भ के दिन मास, वर्ष युग एक साथ आरम्भ हुए। ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिमाद्रि' के अनुसार चैत्र मास में शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जग की रचना की थी। अतः स्पष्ट होता है कि चैत्र मास का यह दिन बड़ा पवित्र और भारतीय आस्था से ओत-प्रोत है।.....

भारत में नववर्ष का शुभारम्भ बसन्त ऋतु के चैत्र मास की शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से होता है। चैत्र सुदि प्रतिपदा का यह दिन भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक व सामाजिक जीवन में विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। खेद का विषय यह है कि भारतीय मानस अंग्रेजीयत के रंग में इतना अधिक रंगा जा चुका है कि वह इस दिन को पहचानता भी नहीं। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावग्रस्त भारतीय ढिढुरती कम्पाती शीत ऋतु में प्रथम जनवरी का स्वागत तो अत्यन्त उन्माद से करता है किन्तु बसन्त ऋतु के मदमाते मोहक वातावरण में आने वाले नवसंवत्सर से जिससे हमारी परम्पराएं और भावनाएं जुड़ी हैं, कोई सरोकार प्रदर्शित नहीं करता।

हमारे देश में अनेक संवत् प्रचलन में रहे हैं जिनमें सप्तर्षि संवत्, कलियुग संवत्, बुद्ध निर्वाण संवत्, कौर्श्य निर्वाण संवत् आदि प्रमुख हैं। अधिकांश संवत् चैत्र प्रतिपदा से आरम्भ किये गए हैं क्योंकि ब्रह्मपुराण में स्पष्ट लिखा गया है-'चैत्रमासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमऽहीन।' 'सिद्धान्त शिरोमणि' ग्रन्थ के अनुसार आदित्यवार में चैत्र मास शुक्ल पक्ष के आरम्भ के दिन मास, वर्ष युग एक साथ आरम्भ हुए। ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिमाद्रि' के अनुसार चैत्र मास में शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जग की रचना की थी। अतः स्पष्ट होता है कि चैत्र मास का यह दिन बड़ा पवित्र और भारतीय आस्था से ओत-प्रोत है।

भारत में प्रचलित अनेक संवतों में से बहुमान्य है विक्रम संवत्। इस संवत् का प्रारम्भ ईसापूर्व 57 माना जाता है। यह संवत् किसी सम्प्रदाय विशेष का संवत् नहीं है। मातृभूमि को विदेशियों से मुक्त करने वाले वीर राजा विक्रमादित्य के नाम से हिन्दी वर्ष के रूप में जाना-पहचाना जाता है। भारत की नर्मदा नदी के उत्तर प्रदेश में इस संवत् का प्रारम्भ चैत्र मास में होता है एवं माह का परिगठन पूर्णिमा तक रहा है। गुजरात प्रदेश में इस संवत् का वर्ष कार्तिक मास में शुरू होता है।

पूरे भारत में विक्रम संवत् विभिन्न समुदायों द्वारा अपने-अपने ढंग से मनाया जाता है। शताब्दियों से सिन्धी समुदाय चैत्र शुक्ल द्वितीया पर 'चेटी चंड महोत्सव' अत्यन्त श्रद्धा व उल्लास से मनाता है। इस दिन श्री झूलेलाल जी की जयन्ती मनाई जाती है। श्री झूलेलाल जी का जन्म विक्रम संवत् 1007 (सन् 951) में चैत्र शुक्ल द्वितीया को शुक्रवार के दिन हुआ था। श्री झूलेलाल जी को जल देवता 'वरुण' का अवतार माना जाता है। सिन्धी लोगों के इष्टदेव श्री झूलेलाल की स्मृति में आयोजित 'चेटी चण्ड महोत्सव' भारत की प्राचीन सिन्धु घाटी की सभ्यता का स्मरण कराता है जहां सब के लिए सुख-शान्ति की मंगल कामना की जाती थी।

विक्रम संवत् को 'वरुण पूजा' तथा चेटी चण्ड महोत्सव के अतिरिक्त आर्य समाज स्थापना दिवस का श्रेय भी प्राप्त है। विक्रम संवत् की श्रेष्ठता, महानता तथा पवित्रता को देखकर ही इस दिन (सन् 1875) में युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में आर्य समााज की स्थापना की थी। इसी दिन स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र में व्याप्त समस्त अन्धकार व अनाचार को दूर करने का संकल्प लिया था इसलिए आर्य समाज से सम्बन्धित विशाल जन समुदाय नवसंवत्सर को अत्यंत हर्षोल्लास से मनाता है।

महाराष्ट्र के निवासी विक्रम संवत् के इस प्रथम दिवस पर 'गुड़ी पड़वा' और आन्ध्र के लोग 'उगाड़ि' के रूप में अपनी मस्ती को अभिव्यक्ति देते हैं। कश्मीरी भी 'नवगह' के रूप में इस दिन को मनाते हैं।

निष्कर्ष यह निकलता है कि सम्पूर्ण राष्ट्र चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के नवसंवत्सर को एक पर्व की तरह मनाता है। वेद, ब्राह्मण, ग्रन्थ, पाणिनी कृत अष्टाध्यायी, सूर्य सिद्धांत, मनुस्मृति तथा महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्य में इस दिन की महत्ता को स्थापित किया है। इन ग्रन्थों में प्रमाण है कि परमात्मा ने इसी दिनसृष्टि रचना करके मास, दिन, मुहूर्त, प्रलय, प्रकृति आदि का निर्माण किया। अतः इतने पावन और प्रचलित दिन को नववर्ष के पहले दिन के रूप में मनाना चाहिए।

- 74, साक्षर अपार्टमैंट, ए-3 ब्लाक, पश्चिम विहार, दिल्ली

बोध कथा — मोह ममता के रिश्ते हैं सब, कोई नहीं यहां अपना रे!

गतांक से आगे -

वह युवक प्रतिदिन महात्मा जी के पास आने लगा। महात्मा जी ने उसे यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि की बातें सुनाई। वे हृदय से युवक को सुधारना चाहते थे। युवक के हृदय में लगन थी। उसने शीघ्रता से इन बातों को सीखा। महात्मा जी ने इस युवक को दस भट्टियों में डालकर कुन्दन बना दिया। उसकी पुरानी आदतों का चिन्ह भी मिट गया। अब वह यम-नियमों का पालन करता, कई-कई घण्टे आसन लगाता। कई प्रकार के प्राणायाम करता, ध्यान भी लगाता। महात्मा ने उसे सब-कुछ बता दिया। 'प्राणायाम उत्थान' की विधि भी बता दी कि किस प्रकार पांव के अंगूठे से लेकर शरीर के प्रत्येक अंग से प्राण को ब्रह्मरन्ध्र में पहुंचा दिया जाता है। यह सब-कुछ बताया, परन्तु समाधि की विधि नहीं बताई।

एक दिन युवक ने कहा-''महाराज! आपने सब-कुछ बताया, परन्तु समाधि लगाने की विधि तो बताई ही नहीं?''

कुछ समय व्यतीत हुआ तो युवक ने कहा-''महात्मा जी, अब?''

महात्मा जी ने फिर टाल दिया।

अन्त में एक दिन युवक ने दुःखी होकर कहा-''महाराज! आख़िर कब तक परीक्षा देनी होगी? मुझ में कौन-सी कमी है, जिसके कारण आप मुझ पर कृपा नहीं कर रहे?''

महात्मा उसे पास बिठाकर बोले-''कृपा करने की बात नहीं है बेटा! जिस समाधि-अवस्था में तू जाना चाहता है, वहां पहुंचने से पूर्व घर-बार, संसार और परिवार का मोह छोड़ देना पड़ता है। इतने दिनों से मैं परीक्षा कर रहा था, सोचता था कि स्वयं ही समझकर इस मोह को छोड़ देगा। परन्तु देखता हूं कि तू इस मोह को छोड़ नहीं पाता। इसलिए समाधि लगाने की विधि तुझे बता नहीं सका।''

युवक ने कहा- ''परन्तु गुरुदेव! इस मोह को कैसे छोड़ दूं? यह तो सत्य है कि मेरी मां है और पिता हैं, मेरी पत्नी है।''

महात्मा बोले-''नहीं बेटा! यह सत्य नहीं, वहम है। जिन्हें आज तू माता, पिता और पत्नी कहता है, ये सदा से तेरे माता, पिता और पत्नी थे नहीं, सदा रहेंगे भी नहीं। सच्ची माता, पिता और मित्र तो वह परमात्मा है, जिसके लिए शास्त्र कहता है:-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्याद्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

- शेष अगले अंक में

- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती
साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

20वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 20वां परिचय सम्मेलन का आयोजन 6 मई, 2018 को आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में प्रातः 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **300/- रुपये** का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **खाता संख्या 910010001816166 IFSC - UTIB0000223 एक्सिज बैंक करोल बाग शाखा** में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। आवेदन भेजने की **अन्तिम तिथि 26 अप्रैल, 2018** है। इसके बाद प्राप्त आवेदनों को विवरणिका में प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। पंजीकरण फॉर्म **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)
एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली (मो. 9540040324)

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में आर्यसमाज का 144वां स्थापना दिवस सम्पन्न

अंधविश्वास के खिलाफ भारत सरकार से कड़ा कानून बनाने की मांग

औषधीय प्रयोग व वैज्ञानिक तरीके से और गौघृत की आहुति देकर यज्ञ करने से वर्षा का योग बनता है - डॉ. कमल नारायण, पर्यावरणविद्

महिला सशक्तिकरण व बेटी बचाओ-बेटी पढाओ अभियान में आर्य समाज जन्मकाल से समर्पित है। - आदर्श कुमार अरोड़ा

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में 17 मार्च 2018 को के मावलंकर हश्वल, रफी मार्ग, दिल्ली में आर्यसमाज का 144वां स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ वेदाचार्य डॉ. देवेश शास्त्री के ब्रह्मत्व में विश्व कल्याण यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती मीनाक्षी-श्री विकास शर्मा, श्रीमती नीरज-श्री ओमपाल सिंह, श्रीमती सुनीता-श्री ऋषि देव वर्मा, श्रीमती शशि-श्री जितेन्द्र खरबंदा ने बड़ी श्रद्धा व भक्ति भाव द्वारा वेदमन्त्रों से सृष्टि संवत् 1 अरब 96 करोड़ 08 लाख 53 हजार 119, नव संवत्सर वर्ष और आर्य समाज स्थापना दिवस के पावन अवसर पर वेद मंत्रों द्वारा प्रभु का गुणगान करते हुए उपस्थित आर्य बन्धुओं का आशीर्वाद और शुभकामनायें प्राप्त कीं।

तदोपरांत आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक आचार्य देव आर्य, संगीताचार्य ने मधुर व प्रेरणापद भक्ति युक्त महर्षि दयानन्द जी व देश भक्ति पूर्ण भजनों से समाबांध दिया।

अंधविश्वास निरोधक पत्रक का विमोचन करते मंचस्थ अधिकारी एवं अतिथिगण

सर्वश्री अशोक गुप्ता, प्रधान, पूर्वी दि. वे. प्र. मण्डल व समाज सेवी, साध्वी उत्त्मा यति, स्वामी सोमानन्द जी, विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सुरेन्द्र कुमार रैली, वरिष्ठ उपप्रधान, विक्रम नरूला, कीर्ति शर्मा, अजय सहगल, उपप्रधान, श्रीमती उषा किरण, उपप्रधाना, सतीश चड्ढा, महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा ने, अखिल भारतीय सेवाश्रम संघ के ब्रह्मचारियों व ब्रह्मचारिणियों के मंत्र गायन के साथ दीप प्रज्ज्वलन किया। ब्रह्मचारियों व ब्रह्मचारिणियों ने, श्री विजय भूषण के नेतृत्व में, नव वर्ष के आगमन पर समूह गान द्वारा सभी का स्वागत किया व शुभकामनाएं दी।

- शेष पृष्ठ 7 पर

उद्बोधन देते डॉ. कमल नारायण शास्त्री, श्री विनय आर्य, श्री सुरेन्द्र रैली, श्री सतीश चड्ढा, साध्वी उत्तमायति जी एवं अन्य अतिथिगण

दीप प्रज्ज्वल से हुआ कार्यक्रम का शुभारम्भ

श्री धीरज घई सुपुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार घई स्मृति आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार

एक रुपीय यज्ञ पुरस्कार

श्री गिरधारी लाल रैली छात्र पुरस्कार

डॉ. कमल नारायण जी को स्मृतिचिह्न भेंट

एक रुपीय यज्ञ पुरस्कार

जादूगर की प्रस्तुति

स्थापना दिवस समारोह में उपस्थित आर्यजनों से भरा मावलंकर हॉल एवं विद्यालयों एवं गुरुकुलों के बच्चों द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

गुजरात के आदिवासी क्षेत्र में वैदिक वातसल्य धाम का शिलान्यास

आर्य समाज नेत्रंग द्वारा संचालित आदिवासी पछात वर्ग विकास मण्डल द्वारा भरूच जिले के नेत्रंग गांव में 25 फरवरी 2018 को आयोजित ''वैदिक वात्सल्य धाम'' का शिलान्यास गुजरात के विधायक श्री महेश भाई वसावा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य के करकमलों द्वारा किया गया। समारोह में भवानीपुर, कच्छ से स्वामी शान्तानन्द सरस्वती, दर्शनयोग महाविद्यालय, रोजड़ के आचार्य दिनेश जी तथा भटार रोड सूरत से योग शिक्षक श्री उमाशंक आर्य भी उपस्थित थे। गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री हंसमुखभाई परमार, उपप्रधान श्री रणजीत सिंह तथा जामनगर, आणंद, बड़ौदा, सूरत, भरूच, बेसना आदि आर्यसमाजों के पदाधिकारी व सदस्यगण भी इस कार्यक्रम में भारी संख्या में उपस्थित हुए।

वात्सलय धाम का शिलान्यास करते सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी एवं उपस्थित अन्य अतिथिगण।

कार्यक्रम में गुजरात के विधायक श्री महेश भाई वसाना ने कहा कि मैं खुद को बड़ा सौभाग्यशाली मानता हूं कि 'मुझे इस प्रकल्प का शिलान्यास करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं उन सभी महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने बड़े पुरुषार्थ से इस प्रकल्प का आयोजन किया है। मैं मानता हूं कि सभी के सहयोग से यहां बहुत जल्द विशाल भवन साकार हो जाएगा और स्थानीय आदिवासी गरीब लोगों को अन्न, वस्त्र, निवास और उत्तम शिक्षा प्राप्त होगी। हम सब मिलकर ऐसा प्रयास करें जिससे यहां के लोग श्रेष्ठ मानव बनें, जात-पांत के भेदभाव से ऊपर उठें तथा उत्तम शिक्षा ग्रहण करके अच्छी रोजगारी प्राप्त करें।'

श्री सुरेश चन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने इस पवित्र भूमि को 40 वर्ष से सुरक्षित रखने वाले वयोवृद्ध श्री केसरी सिंह को नमन करते हुए कहा कि 'जिस प्रकल्प का आज शिलान्यास हुआ है वह इन्हीं महानुभाव की बदौलत सम्पन्न हो सका है। उन्होंने कहा ''भारत के समस्त आदिवासी तथा वनवासी क्षेत्रों में स्थिति बड़ी भयावह तथा विस्फोटक बनी हुई है। ईसाई मिशनरी तरह-तरह के प्रलोभन देकर निरन्तर धर्म परिवर्तन में लगी हुई है। रोटी, कपड़ा, मकान, चिकित्सा और शिक्षा के अभावों से त्रस्त व्यक्ति को धर्म से कोई लेना-देना नहीं होता उसे तो पेट भरने के लिए रोटी चाहिए, तन ढंकने के लिए कपड़ा और रहने के लिए छत चाहिए। इलाज के लिए और पढाई के लिए अस्पताल और स्कूल चाहिए। दुर्भाग्य है कि आदिवासी क्षेत्रों में हम यह सुविधाएं आवश्यकतानुसार उपलब्ध नहीं करा सके हैं जिसका परिणाम आज हम अपनी आंखों से देख रहे हैं। लेकिन निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब जागो तभी सबेरा।' श्री आर्य ने आगे बताया कि मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा तथा पूर्वाचंल के आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज द्वारा काफी कार्य किये जा रहे हैं। गुजरात के इस आदिवासी क्षेत्र पछात वर्ग विकास मण्डल के जिन पदाधिकारियों तथा समर्पित कार्यकर्त्ताओं ने यह साहसिक कदम उठाया है उसके लिये मैं उन सभी का हृदय से अभिनन्दन करता हूं तथा आश्वासन देता हूं कि आपने जो साहसिक कदम उठाया है उसमें आप निश्चित रूप से सफल होंगे। गुजरात की सभी आर्य समाजें आपके इस भागीरथी कार्य में आपके साथ हैं। उपस्थित विद्वानों के आशीर्वचनों के पश्चात् कार्यक्रम सहभोज के साथ सम्पन्न हुआ।

– ***संयोजक***

पुस्तक परिचय

अंध विश्वास

जैसाकि आप सब जानते हैं कि आज अन्धविश्वास को विज्ञान के माध्यम से लोगों के बीच परोसा जा रहा है। उस विज्ञान के जो कभी अन्धविश्वास का विरोधी रहा पर आज टी.वी. मीडिया, अखबार आदि के जरिये अन्धविश्वास घर-घर तक पहुंचाया जा रहा है।

इस सबको ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस पर अन्धविश्वास पत्रक प्रकाशित कर उसका विमोचन कराया गया। सभा द्वारा अन्धविश्वास निरोधक वर्ष के रूप में मनाए जा रहे इस वर्ष में अन्धविश्वास पत्रक को घर-घर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। अत: आप भी महर्षि दयानन्द के इस कार्य को गति देने के लिए सभा से यह पत्रक मंगा सकते हैं। अन्धविश्वास पत्रक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें:-

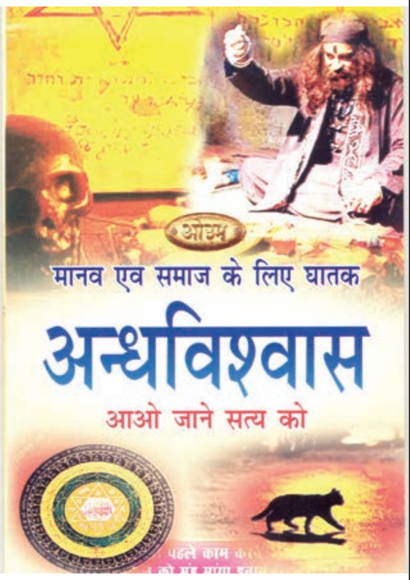

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

अधिकतम संख्या दिवस
1 अप्रैल, 2018

ऐतिहासिक होगा दिल्ली की आर्यसमाजों का अधिकतम संख्या दिवस

आपको विदित ही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित किया जाएगा। आर्यसमाज के समस्त सदस्यों एवं अधिकारियों से निवेदन है कि इस दिन किसी अन्य आर्यसमाज में जाने कोई भी कार्यक्रम न बनाएं केवल अपनी आर्यसमाज में ही सपरिवार – परिवार के सभी छोटे-बड़े सदस्यों, एवं इष्टमित्रों के साथ उपस्थित हों। अधिकम उपस्थिति संख्या वाली 4 आर्यसमाजों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। ये सभी पुरस्कार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली के अवसर पर मुख्य मंच से प्रदान किए जाएंगे। प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान का निर्णय करने के मापदण्ड कई होंगे। इस सम्बन्ध में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा में लिया गया निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।

अपनी आर्यसमाज की अधिकतम संख्या रखने के लिए क्या करें?

➾ समाज के समस्त अधिकारियों एवं सदस्यों को सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारने के लिए व्यक्तिगत ग्रुपों में बांटकर निवेदन करें। ➾ सभी सदस्यों को परिवार के सभी सदस्यों एवं इष्टमित्रों के साथ पधारने का निवेदन करें। ➾ ऐसे सदस्य जो कभी आर्यसमाज से जुड़े रहे हों, किन्तु आज किन्हीं कारणों से कट गए हों, उन्हें घर-घर जाकर आमन्त्रित करके उपस्थित होने का निवेदन करें। ➾ नौजवानों को यजमान के रूप में आमन्त्रित करने का प्रयास करें। ➾ मैसेज, व्हाट्सएप्प द्वारा सभी सदस्यों तक सूचना देवें। ➾ सभा की आई. टी. योजनाओं का उपयोग एवं प्रसार करने का प्रयास करें। ➾ अभी से सब सदस्यों एवं विशेष सहयोगियों की सूची बनाकर उनसे निजी रूप से सम्पर्क करने के लिए अपने अधिकारियों को जिम्मेदारी दे देवें तथा मुख्य सम्पर्क आप स्वयं करेंगे तो अधिक उपयोगी रहेगा।

– ***धर्मपाल आर्य, प्रधान***

Veda Prarthana - II
Regveda - 3

God is the Supreme Being, One May Reach God by Yoga and Meditation

युंजते मन उत युंजते धियो विप्रा
विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्महो
देवस्य सवितुः परिष्टुतिः।।

– यजुर्वेद 5/81/1

Yunjate manah ut yunjate dhiyo vipra viprasya brahato vipashchitah, Vi hotra dadhe vayunavid eka it mahi devasya savituh parishtutih.

- Yajur Veda 5:81:1

The most remarkable thing about true yoga practitioners and true devotees of God is that their mind is constantly consciously aware of and connected to God, the Supreme Consciousness. When awake, they do not forget God even for a moment all day long. Their connection to God is not limited to when praying or meditating. From the moment, the true devotee wakes up in the morning until he/she goes to bed, during all daily activities such as eating or drinking, bathing or cleaning up, reading and/or writing, walking and/ or resting thinking and/or talking, doing regular job or business, his soul and mind are connected to and consciously aware of God.

The true yoga practitioner is constantly aware that God is within his her body and soul, and also he/she is also surrounded by Omnipresent God on all sides, there is no place devoid of God. While the devotee may not have yet experienced or attained God realization, nevertheless, he/she based on his/her spiritual knowledge, previous personal life expeiences, and reading of scriptures and proofs given in them, has a firm resolve about God's presence everywhere, He/she believes, "I was born surrounded by God and since then have been doing all my deeds and activities within Omnipresent God. God gave me my physical body, indriyas i.e. sense and action organs, mind and intellect. God is the One who helps us human beings find true knowledge, strength, courage, bravery, tolerance, patience, kindness, forgiveness, love, faith, trust, joy, inner peace etc. all of the most virtuous attributes".

Advanced true devotees of God do not consider anything else of more value than their relationship with God. Such a devotee has the highest respect, faith, trust and love for God, when compared to any other living being including parents, spouses, children, gurus, sages, kings etc. as well as any physical inanimate thing e.g. wealth or luxury items. They consider following God's teachings as given in the Vedas and related scriptures with similar teachings, as well as the discipline and conduct one has to exercise to follow those teachings supreme and far superior to any other teachings given by human beings including Gurus and others. They have a firm belief in their minds that nobody has more knowledge than God, nor is anybody else their greater protector, well wisher, nurturer, or inspirer because God alone is Omnipresent, Omniscient, Omnipotent, Most Just and Kind and He alone exists outsie, exists within every soul.

True yogis have a firm belief that God as Karmphaldata knows all of their deeds whether they be mental, physical actions, or in the form of words and would give appropriate rewards or punishments based on the deeds and strives to do only virtuous deeds. All human beings have limited knowledge, which is often wrong, while others are ignorant, selfish, and/or have indulgent attachments or infatuations and for all these reasons incapable of giving appropriate judgment for others deeds. Therefore, even if a person escapes punishment or reward for one's deeds from other persons or governmental authorities, he/she would not escape appropriate rewards/punishment from Omniscient God.

A person who joins his/her mind and intellect constantly with God, with God's grace that person every day, evey moment, receives new knowledge and wisdom directly from God within his/her antahkaran i.e. mind and intellect. In addition, such a person's mind is constantly full of virtuous attributes such as patience, inner peace, will power, courage, bravery, contentment, inner joy and these enable him/her success both in his/her personal spiritual growth as well as in interactions with others encountered during daily living. Even if the person per chance does not find initial success, he/she does not become discouraged, morose, repentant, unhappy or miserable. These are the wonderful results and benefits of being consciously constantly joined to God and the reason why advanced true yogis do not lose their connection to God even for a moment.

- Acharya Gyaneshwarya

Dear Divine Lord please bless us and give us a boon that we always believe in and remember You as the most important and precious entity in our life, superior to all other beings and things. Please help us achieve such knowledge, wisdom and ability that we do not forget You even for a moment. May our souls have such deep faith, devotion, and conscious awareness that You are always our closest constant companion existing both within and outside us as well as that we exist within You surrounded by You in all directions. May we perform all our deeds while being aware that You are watching our actions. Moreover, before starting our deeds may we always pray for Your help to acquire true knowledge, strength, courage, bravery, wealth, will power, and Your inspiration to complete the deed properly. Dear God it is our prayer to You that with Your grace and companionship, may all our virtuous deeds be successfully completed without and obstacles.

One might raise the objection that the mind is supposed to be capable of performing only one activity at a time, then how it can be both constantly aware of God and be performing daily activities. While it is true that the mind can only perform one activity at any given moment, yet just as a person while safely driving, can talk, drink a beverage, or eat a candy. Similarly, one can be consciously aware of God while performing regular daily activities. Moreover, not only does God's constant awareness, not interfere with daily activities, but it guides one on an ongoing basis to peform the various deeds virtuously.

This relationship of God and soul is sometimesd compare to that of a small cotton ball (soul), soaking or immersed in a large bucket or ocean of water (God), where water exists both inside the cotton ball and outside it. It must, however, be remembered that God and soul are not physical objects but pure consciousness and have no shape, form or dimensions and cannot be measured like physical objects.

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

खाद्य पदार्थानामनि (47)

गतांक से आगे....

Hotel – उपाहारशाला
Canteen – उपाहारगृहम्
Tiffin center – उपाहारकेंद्रम्
Breakfast – प्रातराशः
Idly – शाल्यपूपः
Puri – पूरिका
Blackgramdosa – माषदोस
Moongdosa – मुद् गदोसा
Onion dosa – पलांडुदोसा
Masala dosa – सोपस्करदोसा
Wheetupama – गोधूमपिष्टिका
Vada – वटिका
Vadapav –वटिकरोटिका
Samosa – समाशः
Kachori – मुद् गपूर्णिका
Panipuri – जलपूरीका
Bread – मृदुरोटिका
Cake – स्निग्धपिष्टकम्
Biscuit – सुपिष्टकम्
Burger – शाकरोटिका
Pizza – पिष्टजा
Fruit jam – फलपाकः
Butter – नवनीतम्
Milk cream – मस्तु
Snacks – उपाहारः
Mirchibajji – मरीचभर्जी
Brinjalbajji – वार्ताकभर्जी
Alubajji – आलुकभर्जी
Chips – कासालुः
Pakodi – पक्ववटी
Palakpakodi – जीवन्तीपक्ववटी
Tamarind chutney – तिन्त्रिण्युपसेचनम्
Groundnut power - कलायचूर्णम्
Mirchi power – मरीचचूर्णम्
Ginger chutney – आर्द्रकोपसेचनम्
Sand witch – सम्पुटाशः
Alu chips with pounded rice –आलुपृथुकम्
Tea centre – चायकेन्द्रम्
Tea party – सपीतिः
Milk – क्षीरम्
Tea powder –चायचूर्णम्
Coffee powder – काफीचूर्णम्
Decoction – क्वाथः
Sugar – शर्करा
Tea – चायम्
Coffee – काफी
Grean tea – हरितचायम्
Cold coffee – शीतलकापी
Cool drink – शीतलपानीयम्
Straw – नालम्
Honey – मधु
Fruit juice – फलरसः

– क्रमशः –

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

सालिग्राम ने तो कुछ नहीं कहा

कविरत्न 'प्रकाश' जी तथा उनके भाई बाल्यकाल में अपने पौराणिक पिताजी के साथ मन्दिर गये। इनके भाई ने एक गोलमटोल पत्थर का सालिग्राम खेलने के लिए अण्टी में बाँध लिया। कविजी ने पिता को बता दिया कि पन्ना भैया ने गोली खेलने के लिए सालिग्राम उठाया है। पिताजी ने दो–तीन थप्पड़ दे मारे और डाँट–डपट भी की। पन्नाजी बोले, ''सालिग्राम ने तो मुझे कुछ नहीं कहा और आप वैसे ही मुझे डाँट रहे हैं।'' पिता यह उत्तर पाकर चुप हो गये।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

37वां वैचारिक क्रान्ति शिविर: 17 से 27 मई, 2018

स्थान : आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली-110034

आर्यजन अभी से तिथियां नोट कर लेवें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। जानकारी के लिए सम्पर्क करें – *जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री (9810040982)*

45वां वार्षिकोत्सव आयोजित

आर्य समाज सै-3 राम कृष्ण पुरम् एवं डी.डी.ए. फ्लैट्स मुनीरिका, नई दिल्ली अपना 45वां वार्षिकोत्सव 31 मार्च से 1 अप्रैल के बीच प्रातः 8 से 10 व सायं 6 से 8:30 बजे के मध्य आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम में आचार्य जयपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ होगा व श्री रामवीर सिंह आर्य भजन प्रस्तुत करेंगे वैदिक प्रवचन आचार्य ब्रजेश जी वैदिक साधना आश्रम गोवर्धनपुर अलीगढ प्रस्तुत करेंगे। *-डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी, मंत्री*

वैदिक विदुषी की आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किए जाने वाले माता अमृतबाई कन्या संस्कृतकुलम् के संचालन एवं व्यवस्था के लिए आर्ष पाठ विधि से शिक्षा प्राप्त विदुषी महिला की आवश्यकता है। आकर्षक वेतन एवं सुविधाएं। संस्कृत कुलम में समस्त व्यवहार संस्कृत भाषा में ही किए जाते हैं। अतः संस्कृत भाषा/ व्याकरण का पूर्ण पारंगत अभ्यर्थी जो दिल्ली में रहकर निरन्तर अपनी सेवाएं प्रदान कर सके, अपना आवेदन पत्र सभी सम्बन्धित प्रमाणपत्रों की प्रति के साथ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पर भेज देवें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। *- महामन्त्री*

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/ परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

– सत्यप्रकाश आर्य 9650183335

पाठकगण कृपया ध्यान दें

आर्य सन्देश के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य सन्देश की कुछ प्रतियां डाक से प्रेषित करने के उपरान्त कुछ दिनों बाद डाक वितरित न होने के कारण कार्यालय में वापस आ जाती हैं। आप सभी सदस्यों से प्रार्थना है कि आप अपना सम्पर्क सूत्र (दूरभाष/चलभाष) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में सम्पादक को अतिशीघ्र प्राप्त कराने की कृपा करें ताकि आपसे सम्पर्क कर कारण का स्पष्टीकरण हो सके।

–सह व्यवस्थापक, 9540040324

आवश्यकता है

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर में लिए 2 रसोइया, एक वार्डन (संरक्षक), एक क्लर्क तथा संस्कृत संस्थापक के मानदेय पर तीन संस्कृत अध्यापक व दो आधुनिक विषय के अध्यापकों की आवश्यकता है। सम्पर्क करें- *स्वामी आनन्दवेश बलदेव नैष्ठिक, प्रबन्धक मो. 9997437990*

प्रवेश सूचना — गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर उ.प्र. में नए सत्र में प्रवेश 1 अप्रैल 2018 से आरम्भ हो रहे हैं। यहां पर मध्यमा स्तर (इण्टरमीडिएट) की परीक्षाएं उ. प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि.वि. वाराणसी द्वारा संचालित है। प्रवेश के लिए छात्र का 5वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। सम्पर्क करें –

- प्रेम शंकर मिश्र, प्राधानाचार्य, मो.9411481624

शोक समचार — चौधरी चरण सिंह जी की सुपुत्री का निधन

आर्य समाज गाजियाबाद के पूर्व प्रधान, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी की पुत्री खैर (अलीगढ़) की पूर्व विधायिका श्रीमती ज्ञानवती जी दिनांक 18 मार्च, 2018 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 21 मार्च को आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर उनके भाई पूर्व केन्द्रीय मंत्री चौधरी अजित सिंह, भतीजे मथुरा के पूर्व सांसद जयन्त चौधरी सहित सैकड़ों गणमान्य लोगों ने भाग लिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

पृष्ठ 4 का शेष

अंधविश्वास के खिलाफ ....

समारोह में विशिष्ठ अतिथि के रूप में पधारी साध्वी उत्त्मायति ने अपने आशीर्वाद में दैनिक यज्ञ का महत्त्व बताया तथा प्रत्येक मानव को दैनिक यज्ञ करने का कर्त्तव्य बताया।

मुख्य अतिथि श्री आदर्श कुमार अरोड़ा, समाजसेवी व जनरल मैनेजर बैंक ऑफ इण्डिया ने कहा कि 'सामाजिक कुरीतियां उन्मूलन में आर्य समाज का सराहनीय प्रयास रहा, महिला सशक्तिकरण व बेटी बचाओ- बेटी पढाओ अभियान में आर्य समाज जन्मकाल से समर्पित है।'

आर्य परिवार से सम्बन्धित श्री दीपक केडिया, वरिष्ट आई.पी.एस. गृह मंत्रालय, ने कहा कि आर्यसमाज ने न केवल वैदिक सस्कारों का प्रचार प्रचार किया है बल्कि अन्य प्रकल्पों द्वारा विद्या दान व परोपकारी कार्यो के लिए प्रयासरत रहा है।

डॉ. कमल नारायण, पर्यावरणविद् ने यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण जानकारियां साझी की तथा कहा 'यज्ञों से सुख-समृद्धि होती है, औषधीय प्रयोग व वैज्ञानिक तरीके से और गौघृत की आहुति देकर यज्ञ करने से वर्षा का योग बनता है।' सभा की ओर से सर्वश्री शिव कुमार मदान, ओम प्रकाश आर्य, विद्यामित्र ठुकराल, कीर्ति शर्मा एवं साध्वी उत्तमायति जी ने डॉ. कमल नारायण जी का स्वागत-सम्मान किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा 'आर्य समाज स्थापना दिवस पर जनजागृति अभियान चलाकर अंधविश्वास व पाखण्ड को समूल नष्ट करने की जरूरत है। मानव जीवन सब प्राणियों में उच्च स्थान पर है तथा उसका लक्ष्य धार्मिक सामाजिक होते हुए परोपकार व निष्काम कर्म करने का होना चाहिए। पाखण्ड व अन्धविश्वास का विरोध करते हुए भारत सरकार से अनुरोध किया जाता है कि पाखण्ड व अन्धविश्वास को पोषित करने वालों के विरुद्ध कड़े दण्डात्मक कानून का प्रावधान करे। अन्धविश्वास के विरोध में हस्ताक्षर अभियान का आरम्भ करने का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित 'अन्धविश्वास पत्रक' व श्रीमती कंचन आर्य द्वारा लिखित 'मदरर्स गिफ्ट टू यंग' पुस्तक का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष, सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली ने सुदूर व अशिक्षित क्षेत्रों में युवाओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं को अग्रणी रहने का आह्वान किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना से पर्यावरण शुद्धि और अंधविश्वास निवारण पर बल दिया।

इस अवसर पर मेवाड़ से आये जादुगर राजतिलक ने अपने हाथों से कुछ करतबों का मोहक प्रदर्शन करते हुए ढोंग व आडम्बरों के विरुद्ध जादू के खेल दिखाए। आर्यवीरदल, कीर्तिनगर के आर्यवीरों ने यज्ञ की रक्षा हेतु नाटिका का मंचन कर समझाया कि वर्तमान में जितनी यज्ञ की रक्षा आवशक है उतनी ही प्राचीन काल में भी आवश्यक थी तभी तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने जगलों में जाकर यज्ञ की रक्षा की। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा ने भारतीय नववर्ष विक्रमी संवत् 2075 की शुभकामनाएं देते हुए सबको आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी, साथ ही काला जादू, टोटका, चमत्कारी यंत्र आदि जिनसे जन साधारण को मूर्ख बनाकर आर्थिक रूप से लूटा जाता है व मानसिक व शारीरिक कष्ट दिये जाते हैं। जनमानस का शोषण व धोखाधड़ी न हो सके। सभी आर्यजनों ने संकल्प लिया कि भ्रमित प्रचार के खिलाफ ऐसे विज्ञापनों पर रोक हेतु जनहित याचिकायं डाली जायें, प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

इस अवसर पर श्री धीरज घई सुपुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार घई आर्य कार्यकर्त्ता स्मृति पुरस्कार से श्रीमती ज्योति व श्री यशपाल आर्य को सम्मानित किया गया जिन्होंने अपने बच्चों, कु. नन्दनी व अभिनन्दन को वैदिक प्रचार-प्रसार की राह पर महर्षि दयानन्द के वीर सैनिक बना दिया है जो अक्सर सभाओं के मंच पर कुछ नया करते हुए दिखाई देते रहते हैं। 'एक रूपीय यज्ञ' की समाहुतिक प्रस्तुति हेतु अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, आर्यसमाज पश्चिमी पंजाबी बाग तथा आर्यसमाज प्रीतविहार के अधिकारियों को सम्मनित किया गया। श्री गिरधारी लाल रैली मेध ाावी छात्र पुरस्कार - रूबेन जाँनसन को व माता अमृत देवी प्रदान किया गया। रैली मेधावी छात्रा पुरस्कार - कु. शिवानी शर्मा को प्रदान किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती वीणा आर्या, श्री योगेश आर्य, श्री राजेन्द्र पाल आर्य, श्री एस.पी.सिंह, श्री सुरिन्द्र चौधरी,श्री नीरज आर्य, श्री सुभाष कोहली, डॉ. मुकेश आर्य, श्री बिट्टू आर्य, श्री राजू आर्य, श्री जय प्रकाश शास्त्री, श्री विपिन भल्ला, एस.एम आर्य पब्लिक स्कूल पश्चिमी पंजाबी बाग की आध यापिकाओं व सहयोगियों का तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारियों एवं सहयोगी कर्मचारियों का विशेष योगदान रहा जिसके लिए मैं सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद व साधुवाद करता हूं। कार्यक्रम में विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों व सदस्यों ने उपस्थित होकर धर्म लाभ प्राप्त किया व हमें प्रोत्साहित किया, उनका धन्यवाद। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

–सतीश चड्ढा, महामंत्री
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

सोमवार 19 मार्च, 2018 से रविवार 25 मार्च, 2018
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 22/23 मार्च, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21 मार्च, 2018

प्रथम पृष्ठ का शेष

वर्ष प्रतिपदा नवसम्वत्सर .....

मत-मतान्तर, सम्प्रदाय, मजहबों के ज्ञान का आधार मानवीय ज्ञान है जबकि धर्म का आधार परमात्मा है।

धर्म के कारण मानव समाज कभी नहीं लड़ा वह मजहबों के कारण सदा से लड़ रहा है और लड़ता रहेगा।

जातिवाद के कारण मानव, मानव में कोई भेद नहीं मानता - जन्म के अनुसार किसी जाति का समर्थन आर्य समाज नहीं करता। मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार उसकी योग्यता के अनुसार उसको मान्यता देता है। यही व्यवस्था हमारे सनातन धर्म में सनातन संस्कृति में दर्शायी है जिसे वर्ण व्यवस्था कहते हैं। आर्य समाज किसी को अछूत, दलित, ऊँच-नीच नहीं मानता, आर्य समाज में हजारों वे व्यक्ति जिनका जन्म पिछड़े (समाज की तथाकथित मान्यता के अनुसार हरिजन या शूद्र) परिवार में हुआ। आर्य समाज के सम्पर्क में आकर वे उच्च पदों पर आज बैठे हैं, धर्म पण्डित बने हैं, आचार्य शास्त्री, पुरोहित का सम्मान पा रहे हैं।

पास के ही देश मॉरिशस में आर्य समाज की एक बड़ी सभा रविदास के नाम पर (रैदास जिन्हें मोची समाज का कहा जाता है) आर्य सभा है, जिसमें महिला व पुरुष वहाँ के पुरोहित पण्डित हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं। हमारे संविधान के शिल्पकार डॉ. भीमराव आम्बेडकर को समाज जब अछूत-अछूत कहकर उपेक्षित करता था, उस समय आर्य समाजी विद्वान ने उन्हें कुछ समय अपने पास रखा और बड़ोदरा महाराज से उनकी पढ़ाई हेतु सहयोग का प्रस्ताव रखा।

असाम्प्रदायिक संस्था है - आर्य समाज एकमात्र असाम्प्रदायिक संगठन है क्योंकि वह किसी मानवीय ज्ञान का नहीं अपितु ईश्वरीय ज्ञान का साधक है। इसी कारण आर्य समाज की स्थापना पारसी महोदय अदेर जी डॉ. मानक जी शाह, मुम्बई की बाड़ी में हुई (जहाँ आज कांकड़वाड़ी आर्य समाज है) इसके निर्माण में पहला दान 1875 में हाजी उल्ला रखखा खां के द्वारा 5100/- का दिया गया। ट्रिबुनल पेपर के सम्पादक भाई दयालसिंह मट्ठा ने पहला आर्य समाज अमृतसर में प्रारम्भ किया। ईसाई विचारधारा से पूर्ण थियोसोफिकल सोसायटी ने आर्य समाज विचारधारा के साथ मिलकर कार्य प्रारम्भ किया। सरदार भगतसिंह के दादा सरदार अजीतसिंह ने इन सिद्धान्तों को स्वीकारा। इस प्रकार की ईश्वर वाणी पर स्थापित आर्य समाज की विचारधारा को विभिन्न सम्प्रदायों ने सराहा, सहयोग दिया और स्वीकारा। इसका एकमात्र कारण है आर्य समाज साम्प्रदायिक संगठन नहीं है, "**सर्वे भवन्तु सुखिनः**" का सन्देश देता है।

राष्ट्रीय भावना का प्रबल समर्थक - आर्य समाज राष्ट्रीय कर्त्तव्य को अपना राष्ट्रीय धर्म मानता है। संसार के सभी आर्य समाजों में यज्ञ करते हैं और उस समय राष्ट्र की उन्नति, सुरक्षा, विकास के लिए यज्ञ में आहुतियां दी जाती हैं। भारतीय इतिहास इसका साक्षी है स्वतन्त्रता के संघर्ष में आर्य समाज का सबसे बड़ा योगदान रहा। श्यामजी कृष्ण वर्मा जो महर्षि के अनन्य शिष्य थे, महर्षि की राष्ट्रीयता से प्रभावित और आदेश मानकर इंग्लैण्ड गए वहीं राष्ट्रीयता व स्वाधीनता के लिए उन्होंने वीर सावरकर, मदनलाल ढ़ींगरा, मैडम कामा, दादा भाई नोरोजी को प्रेरित किया। लाल लाजपतराय, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीदे आजम भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, भाई परमानन्द आदि तथा महान क्रांतिकारी, समाज सुधारक अनेक बलिदानियों के प्रेरक स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के ही संस्कारों से देशभक्त कहलाये।

अनेक सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया, आर्य समाज ने अछूतोद्धार व नारी जाति के लिए जो कार्य किया वह समाज सुधार की दृष्टि से एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

देश की पहली कन्या पाठशाला जालन्धर में आर्य समाजी नेता लाला देवराज द्वारा प्रारम्भ की गई। आर्य समाज के प्रयास से आज देश-विदेश में अनेक विदुषी धर्माचार्य, पण्डिता, वेदों की ज्ञाता नारी है। दहेज प्रथा, बलि प्रथा, कम उम्र की शादी, सतिप्रथा, छुआछूत का विरोध किया, विधवाओं के पुनः विवाह की स्वतन्त्रता हेतु प्रयास किया।

आर्य समाज की मान्यता से विश्व शान्ति सम्भव - आज गली मोहल्ले से लेकर पूरा विश्व अशान्त, दुःखी और विवादों से परेशान है उसका एकमात्र कारण साम्प्रदायिक विचारधारा है। साम्प्रदायिकता इन सारे विवादों की जड़ है। साम्प्रदायिकता के कारण जाति, ईश्वर, धर्म, स्थानों को लेकर भिन्नता है। हर सम्प्रदाय अपनी शक्ति, अपना प्रभुत्व बढ़ाकर संसार पर केवल अपना वर्चस्व चाहता है किन्तु धर्म जिसमें जाति, सम्प्रदाय, स्थान, समयकाल, भाषाभेद, गोराकाला किसी प्रकार का कोई स्थान नहीं है। वह इन सबसे उपर होकर सबके लिए सदा के लिए समान भाव रखता है।

आर्य समाज धर्म का अनुयायी है, सम्प्रदाय अपनी संख्या बढ़ाने को, अपनी उपलब्धि मानते हैं जबकि धर्म का लक्ष्य संख्या नहीं श्रेष्ठ मानव निर्माण है।

धर्म में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई या कोई अन्य सम्प्रदाय या जाति की चर्चा नहीं है, वहाँ तो एक ही नारा है "**मनुर्भव जनया दैव्या जनम्**" यह ईश्वरीय सन्देश है, मनुष्य बनकर श्रेष्ठ मनुष्य बनाओ। यह ईश्वरीय सन्देश है इससे संसार का कोई भी व्यक्ति असहमत नहीं हो सकता। इसी सन्देश को आर्य समाज मानता है, इसलिए यही ईश्वरीय, निष्पक्ष विचार विश्व शान्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम हो सकता है।

आर्य समाज के द्वारा आध्यात्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय तीनों पर अनेक कार्य किए जा रहे हैं, शिक्षा के क्षेत्र में - गुरूकुल, विद्यालय, महाविद्यालय तथा अनाथालय, गौशाला, वाचनालय, स्वास्थ्य केन्द्र, अस्पताल, वृद्धाश्रम, सेवालय, आर्य समाज मन्दिर आदि अनेक कार्य हजारों की संख्या में संचालित किए जा रहे हैं।

भारत वर्ष के बाहर 33 देशों में आर्य समाज की गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं।

आर्य समाज मानवता का रक्षक, सनातन धर्म प्रचारक, अन्धविश्वास, पाखण्ड विरोधी, सेवा कार्यों में लगा हुआ, राष्ट्र के प्रति समर्पित एक संगठन है।

- मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह